विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

मोसे छल किये जाए.....

सबसे पहले यह बात स्पष्ट कर दूं कि न तो मैं इसी शीर्षक से बने एक धारावाहिक की बात करने वाला हूं और न ही इस मुखड़े वाले एक बेहद लोकप्रिय फ़िल्मी गाने की। मैं बात कर रहा हूं उन नए तौर तरीकों की जो आपको हमें छलने के लिए काम में लिये जाने लगे हैं! पिछले कुछ बरसों में परिवर्तन की गति बहुत तेज़ हुई है। विख्यात भविष्यवादी और अंतरराष्ट्रीय बेस्ट सेलर किताब '**द सिंगुलरिटी इज़ नियर**' के लेखक रे कुर्ज़वील ने दो टूक शब्दों में कहा है कि परिवर्तन की गति हर दशक में तेज़ होती जा रही है। उनके अनुमान के अनुसार अब से बीस वर्षों में परिवर्तन की दर आज की तुलना में चार गुना ज़्यादा होगी। वे एक बहुत चौंकाने वाली बात कहते हैं। वे कहते हैं कि हम इस सदी में बीस हज़ार वर्षों का परिवर्तन देख लेंगे।

ये बदलाव सभी स्तरों पर हो रहे हैं। जैसा मैंने पहले भी कहा है, अब बदलावों की गति बहुत तेज़ हो गई है इसलिए हमें बदलाव बहुत साफ़ नज़र भी आ जाते हैं। आज से चालीस पचास बरस पहले बदलावों की गति इतनी तेज़ नहीं हुआ करती थी इसलिए पीढ़ियां बदल जाती थीं, बदलावों पर हमारी नज़र जाने से पहले। आज जो बदलाव हमारे चारों तरफ हो रहे हैं, उनके बारे में कोई भी मूल्य निर्णय करना न तो सम्भव है और न निरापद। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि परिवर्तन के प्रति आपका नज़रिया क्या है! अगर आप यथास्थिति वादी हैं तो आपको हर परिवर्तन अखरेगा और अगर आप खुले सोच वाले हैं तो आप उनके सकारात्मक पक्ष को देखते हुए उनका आकलन करेंगे। जीवन में कुछ भी ऐसा नहीं होता है जो एकदम अच्छा या एकदम बुरा हो। हालांकि यह बात भी सही है कि निस्संग होकर किसी बदलाव का आकलन करना उतना आसान नहीं होता, जितना यह कह देना होता है। हमारे पूर्वाग्रह भी हमारे निष्कर्षों को प्रभावित करते ही हैं। अगर हम अच्छे और बुरे से हटकर सोचें तो पाएंगे कि अंततः अधिकांश बदलाव हमारे जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं।

मैं नए का उत्साही समर्थक हूं। जड़ता मुझे कभी पसंद नहीं आती, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। जीवन चलने का नाम है, तो चलते रहना चाहिए, और चलना अगर आगे हो तो कहना ही क्या!

कभी-कभी पीछे की तरफ भी चलते हैं, भले ही उसे नाम कोई अच्छा-सा दे दिया जाए, लेकिन मुझे पीछे की तरफ चलना हमेशा व्यथित और कुपित करता है। जब हम आगे की तरफ चलते हैं तो कुछ को, विशेष रूप से उनको जो परम्परा प्रेमी हैं, बहुत सारी नई बातें असहज करती हैं, लेकिन समय के साथ वे भी उनके अभ्यस्त, बल्कि प्रशंसक होते जाते हैं। अगर कुछ स्थूल उदाहरण लेने हों तो इन बातों को खान-पान और वेशभूषा के संदर्भ में समझा जा सकता है। एक समय था जब घर से बाहर खाना बुरा माना जाता था लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता हमें उसके भी लाभ दिखाई देने लगे और आज बाहर खाना तनिक भी बुरा नहीं माना जाता है। यही बात वेशभूषा के संबंध में भी है। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब महिलाओं का सलवार सूट पहनना कुछ ज़्यादा ही आधुनिक, और इसलिए असहज करने वाला माना जाता था। आज उसे पूर्ण स्वीकृति मिल चुकी है। ऐसा ही कुछ विदेश यात्राओं को लेकर भी है। कभी विदेश जाने वाले जाति-समाज बहिष्कार का दण्ड भोगते थे, फिर वे सम्मानित होने लगे और आज यह आम बात है।

जब बदलाव आते हैं तो वे आपके हमारे जीवन को अनेक कोणों से प्रभावित करते हैं। ये प्रभाव कभी स्वागत योग्य होते हैं और कभी अवांछित। मैं दो-तीन ऐसे बदलावों की यहां चर्चा करना चाहता हूं। पिछले कुछ बरसों में हमारे लेन-देन और खरीददारी के तौर तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। पहले जहां बैंक जाकर हम पैसे निकाल कर लाते थे अब हमारा काम एटीएम से चल जाता है। न केवल इतना अब बहुत बार तो महीनों करेंसी को हाथ लगाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है। ऑनलाइन मनी ट्रांसफर और भुगतान की यूपीआई पद्धति हमारे लिए बहुत आम हो चली है। बाज़ार जाकर खरीददारी करने की बजाय ई कॉमर्स साइट चलाकर हमारा सामान हमारे घरों तक पहुंचा देती हैं। इन सबसे हमारा जीवन बहुत आसान हुआ है, लेकिन इन सब में धोखा धड़ी की संभावनाएं भी खूब बढ़ी हैं। ओटीपी को लेकर किये जाने फ्रॉड, बैंक और वित्तीय संस्थानों का नाम लेकर ठगों द्वारा हमारी गोपनीय जानकारियां जुटाकर उनका दुरुपयोग कर लेना, मिथ्या और भ्रामक विज्ञापन देकर और सस्ते का आकर्षण पैदा करके हमसे पैसे ले लेना और फिर गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो जाना – ये कुछ ऐसे मामले हैं जिनसे हममें से बहुत सारे लोग परिचित हैं। सारी सावधानी रखते हुए भी लोग इनके शिकार हो जाते हैं।

असल में हर बदलाव अपने साथ नई चुनौतियां और नए खतरे लाता है। जहां यह बहुत ज़रूरी है कि हम बदलावों को स्वीकार करें, वहीं यह भी उतना ही ज़रूरी है कि हम बिना सोचे समझे और बिना उनकी यांत्रिकी को समझें उन बदलावों को न अपनाएं। अगर हम एक बार ठीक से बदलावों की कार्य पद्धित को समझ लें तो उससे होने वाली बहुत सारी क्षतियों से ख़ुद को बचा सकेंगे।

इधर सोशल मीडिया एक वैकल्पिक मीडिया के रूप में भी बहुत तेज़ी से उभरा है और इसने हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी भी दी है। लेकिन इस आज़ादी का वैयक्तिक और संस्थाबद्ध दोनों तरह से दुरुपयोग भी कम नहीं हुआ है। लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए छद्म नाम से इन माध्यमों का दुरुपयोग किया है तो संस्थाओं, विशेष रूप से राजनीतिक दलों ने अपने आईटी सेल्स के माध्यम से प्रतिपक्षियों की छवि बिगाड़ने के लिए व्यवस्थित और संगठित प्रयास किए हैं। अपराधी तत्वों ने भी इन साधनों का दुरुपयोग कम नहीं किया है। यहां से सूचनाएं जुटाकर उनका मनचाहा किंतु हानि पहुंचाने वाला दुरुपयोग करने से लगाकर चरित्र हनन के अनेक मामलों से हम आए दिन रू-ब-रू होते रहते हैं।

असल में हर बदलाव अपने साथ नई चुनौतियां और नए खतरे लाता है। जहां यह बहुत ज़रूरी है कि हम बदलावों को स्वीकार करें, वहीं यह भी उतना ही ज़रूरी है कि हम बिना सोचे समझे और बिना उनकी यांत्रिकी को समझें उन बदलावों को न अपनाएं। अगर हम एक बार ठीक से बदलावों की कार्य पद्धति को समझ लें तो उससे होने वाली बहुत सारी क्षतियों से ख़ुद को बचा सकेंगे।

मसलन, अगर आप बैंकों की कार्य प्रणाली को ठीक से समझ लें तो आप अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड के दुरुपयोग से काफी हद तक खुद को सुरक्षित रख सकेंगे। अगर आप यह समझ लें कि आपके ओटीपी का क्या और कितना सीमित उपयोग करना है तो उसे आप हर किसी को नहीं बताएंगे और इस तरह उसके दुरुपयोग से होने वाली हानि से बचे रहेंगे। असल में होता यह है कि हम यह मान कर चलते हैं कि हमारे साथ तो कुछ बुरा हो ही नहीं सकता। और इसलिए हम वहां भी असावधान हो जाते हैं जहां हमसे सावधानी अपेक्षित होती है। और तब वही होता है जो एक नारे में कहा गया है – सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।

जैसे-जैसे बदलावों की रफ्तार तेज़ होती जा रही है, हमारे चारों तरफ की चीज़ें भी बहुत तेज़ी से बदल रही हैं। हम उनसे बच नहीं सकते। अगर हम न चाहें तो भी बहुत सारे बदलावों को अपने जीवन में आने से रोक ही नहीं सकते। ऐसे में सावधानी बरतने का महत्व और कई गुना बढ़ जाता है। यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसे यह कि पहले सड़क पर हमारे चलने की गति बहुत कम थी, अतः वैसे में दुर्घटना से होने वाली क्षति भी छोटी हुआ करती थी। एक साइकिल किसी पैदल चलने वाले को टक्कर मार भी देती तो ज़्यादा से ज़्यादा एकाध हड्डी टूटती। अब बहुत तेज़ी से उड़ने वाले विशालकाय वायुयानों, तेज़ गति वाली रेल गाड़ियों और सुपर एक्सप्रेस राजमार्गों पर हवा से बातें करने वाले वाहनों के ज़माने में जो दुर्घटनाएं होती हैं वे आकार और क्षित में बहुत बड़ी होती हैं। लेकिन इन दुर्घटनाओं के कारण हम घर से निकलना तो बंद नहीं कर देते हैं। बस, इतना ही होता है कि हममें से जो सावधानी बरतते हैं वे सुरक्षित रहते हैं। और वैसे यह भी सच है कि बहुत बार आपकी अकेले की सावधानी कोई अर्थ नहीं रखती है। अगर आप एक वायुयान में हैं और वह दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है इसके लिए आपकी सावधानी पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता है! इसी तरह आप लाख सावधानी बरतते रहें, अगर आपका बैंक डूब जाता है, तो उसमें आपका क्या दोष है? यह बदलाव और प्रगति (अगर इसे प्रगति कहा जाए) के साथ स्वतः चला आने वाला ख़तरा है, और इसे जीवन के एक अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार करना होगा।

मैंने बात छल से प्रारम्भ की थी। उसी पर लौटता हूं। यह एक कड़वी सच्चाई है कि बहुत बार चोरों के लिए दरवाज़े हम ही खुले छोड़ते हैं। हम ही पुकार-पुकार कर कहते हैं कि आओ, हमें छलो। एक बार सावधानी से देखें कि आपको कैसे-कैसे छला जा सकता है और फिर हर तरह की सावधानी बरतें। इस बात को समझें कि हर नई सुविधा अपने साथ नए ख़तरे भी लेकर आती है। उन ख़तरों से अपनी रक्षा ख़ुद आपको ही करनी है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मणिपुर : न हम ज़्यादा जानते हैं और न ही कोई कोशिश नज़र आती है

डॉ. रामावतार शर्मा

हम में से बहुत सारे लोग रंगून से लेकर जावा, सुमात्रा और अंगकोर वाट से लगाकर हिंदुकुश तक के विराट भारत जिसे आर्यावृत्त भी कहा जाता है, का सपना पाले हुए हैं। सपने से जाग कर यदि ये लोग अपने आप से संवाद करें तो आश्चर्य होगा कि जो भारत आज है उसके बारे में वे कितना कम जानते हैं। उत्तरपूर्वी भारत के राज्य जो कभी सात बहनें (सेवन सिस्टर्स) के नाम से जाने जाते थे वहां का एक छोटा-सा हिस्सा पिछले एक महीने से भी ज्यादा समय से दहक रहा है परंतु विश्व की प्रमुख सैन्य शक्ति और सबसे अधिक पुलिस बल की मालिक भारत सरकार असहाय और मौन खड़ी देख रही है। यह जलता धधकता राज्य मणिपुर जहां के पुराने कांठोसी और अब नव अवतार में शुद्ध हुए बीजेपी के मुख्यमंत्री एन बिरेन सिंह की तो इतनी हिम्मत भी नहीं हुई कि इस लघु राज्य में अशांत क्षेत्रों का एक दौरा कर सकें। जनता द्वारा चुने गए नेता की जनता पर कमजोर पकड का यह एक ज्वलंत उदाहरण है। तिकड़मबाजी से चुनाव जीतना और जन सम्मान पाना दो अलग बातें होती हैं इस बात को बिरेन सिंह ने स्पष्ट तौर से दिखा दिया है।

भारत की मुख्य धारा के लोग उत्तरपूर्वी भारत के बारे में कितना जानते हैं? जो थोड़ी-सी जानकारी है वह असम के प्रमुख शहरों के बारे में चंद व्यापारियों तक सीमित है। भारत के विभिन्न भागों को संवाद द्वारा जोड़ने के प्रयास कहीं नजर नहीं आते हैं। देश एक है पर लोग बेगाने से लगते हैं। किसी भी समाचार पत्र या टीवी पर कोई मणिपुरी विचारक, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता आदि नजर नहीं आता है। राष्ट्रीय स्तर के समाचारों का कोई संवाददाता उत्तरपूर्व भारत में नहीं है इसलिए जो कुछ भी लिखा जाता है वह काफी हद तक व्यक्तिगत निष्कर्ष ही है। ऑनलाइन भी ढूंढने जायेंगे तो इन राज्यों के बारे में ज्यादा कुछ प्राप्त नहीं होता है। 3 मई 2023 की हिंसा के पहले कितने लोगों ने कुकी, मैती और चुराचंद पुर के बारे में सुना था? फिर कैसे अचानक लोगों में यह धारणा बना दी गई है कि क्रिश्चियन कुकी तो हिंसक और बदमाश हैं परंतु हिंदू मैती सीधे लोग हैं? धर्म का सहारा लिए इस तरह के प्रायोजित प्रोपेगंडा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा नहीं देते हैं और कोई धर्म विशेष ही देश प्रेमी होने का दावा नहीं कर सकता है।

मणिपुर में तीन मुख्य नस्लें निवास करती हैं। कुकी मुख्यतया पहाड़ों के निवासी हैं, ट्राइब हैं और भारत में रहते हुए दार्जिलिंग के गुरखा लोगों की तरह एक स्वायत शासन की मांग करते रहते हैं। ये बहुमत से क्रिश्चियन लोग हैं पर जीव वादी एवम् कुछ मुस्लिम आदि भी रहते हैं।

मैती मणिपुर घाटी के वासी हैं, पचास प्रतिशत से अधिक बहुमत इन्हीं का है, ये मुख्य रूप से हिंदू हैं परंतु क्षेत्रफल इनके पास मात्र 10 प्रतिशत है, फिर भी सरकार और प्रशासन ज्यादातर इन लोगों के पास ही है। ये लोग चाहते हैं कि इन्हें भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिल जाए ताकि ये लोग पहाड़ों पर भूमि खरीद सकें। झगड़े की जड़ यही मुद्दा है क्योंकि पहाड़ी भूभाग होने से मणिपुर में बसने लायक भूमि की कमी है और वन ही आमदनी का सबसे बड़ा स्त्रोत है।

यहां की तीसरी धारा नागा लोगों की हैं जो पूरे उत्तरपूर्वी भारत के नागा लोगों को एक साथ जोड़ कर भारत के अंदर ही नागालिम स्वशासित राज्य की मांग करते हैं जिसमें म्यांमार के नागा भी शामिल हों क्योंकि ये लोग वर्षों पहले अंठोजों द्वारा किए भारत बर्मा नागा क्षेत्र के विभाजन को स्वीकार नहीं करते हैं।

इस तरह से मैती, कुकी और नागा आज के भारत से विभाजित नहीं होना चाहते परंतु अपना प्रशासन अपने ही हाथ में रखना चाहते हैं। यही कारण है जिसकी वजह से भारतीय सेना या केंद्रीय अर्ध सैनिक बल इन लोगों पर गोली नहीं चलाते हैं और एक शांति स्थापना करने वाले बल के रूप में ही कार्य करते हैं। भारतीय सेना जहां तक संभव होता है अपने देशवासियों पर गोली नहीं चलाने के लिए प्रशिक्षित की जाती है। मणिपुर में जो कुछ भी हुआ है उसकी पूर्ण जिम्मेदारी एन बिरेन सिंह सरकार की है या फिर उन लोगों की है जो इस सरकार को दूर से नियंत्रित किए हुए हैं। सैंकडों लोग मारे जाए, मणिपुर घाटी की पुलिस चौकियों में लोग आएं और 3500 से भी ज्यादा राइफल तथा पिस्टल ले कर अपने ही राज्य के लोगों की हत्या करें, कितनों को जिंदा जलाएं परंतु प्रशासन मौन रहे, मुख्यमंत्री घर में बैठे रहें तो इस स्थिति को क्या नाम दिया जायेगा?

भारत जैसे विशाल देश में मणिपुर एक मोहल्ले जैसा है। वैश्विक शक्ति का दावा करने वाले हम लोग यहां की हिंसा और तबाही को नहीं रोक पाए तो इस बात से क्या निष्कर्ष निकाला जाएगा? क्या इतनी बड़ी हिंसा के पीछे कोई छिपा हुआ उद्देश्य है? क्या किसी को सबक सिखाने की दुर्भावना है? या फिर सब कुछ इसलिए हुआ कि सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों को भारत के दूर दराज के हिस्सों के बारे में पूरी एवम् तथ्यपरक जानकारी नहीं है। इतने विशाल देश के बारे में पूर्ण जानकारी किसी भी व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। ऐसे में देश का सूचनातंत्र ही काम आता है। क्या इस तंत्र में ऐसे लोग प्रविष्ट हो गए हैं जो एक जड़ विचारधारा से प्रेरित हैं और किसी एजेंडा के तहत कार्यरत हैं। यदि ऐसा है तो यह एक खतरनाक स्थिति है और यह राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है। हर देशवासी सम्मान का अधिकारी है। हम गुलामी के युग से कहीं आगे बढ़ चुके हैं इसलिए किसी भी नागरिक को द्वितीय श्रेणी की तरफ नहीं धकेल सकते।

लोग सारे झगड़े की जड़ जमीन, अफीम की खेती, हथियारों का अवैध व्यापार और मानव तस्करी बता रहे हैं। ये सब बातें सच हो सकती हैं परंतु फिर भी कुछ स्वाभाविक सवाल उठते हैं। पहला तो यह कि क्या ये सब कारण भारत के अन्य प्रांतों में किसी न किसी मात्रा में मौजूद नहीं हैं? किस राज्य में नशीले पदार्थों, हथियारों, मानव तस्करी में उलझे लोग नहीं हैं? जमीन को लेकर तो हर दूसरे घर में संघर्ष देखा जा रहा है। ऐसे में मणिपुरी लोगों को ही अलग निगाह से क्यों देखा जा रहा है? गैर कानूनी धंधों में किसी भी समाज के सभी लोग जुड़े हुए नहीं होते हैं। किसी समाज के 10-15 प्रतिशत लोग यदि गैर कानूनी कार्य से जुड़े हुए होते हैं तो पूरे समाज को एक ही रंग से पोतना कैसे उचित हो सकता है? यहां हम कुकी लोगों को हथियारों की तस्करी का भागीदार कह सकते हैं परंतु मैती क्षेत्रों के पुलिस थानों से 3500 से ज्यादा राइफल लूटनेवाले मैती लोगों पर चुप्पी को क्या कहा जायेगा?

समस्या के मूल को समझा जाए तो यह राजनीतिक अति महत्वकांक्षा का परिणाम है। कुछ लोग पूरे देश पर अपना ही एक छत्र साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं जो संभव नहीं है। प्रजातंत्र का मूलमंत्र हमें चींटियों से सीखना चाहिए। राजनीतिक विरोध को विरोध ही समझना अच्छा है दुश्मनी नहीं। भारत जैसे विविधता वाले देश में किसी भी राजनीतिक पार्टी या विचारधारा का एकाधिकार संभव नहीं है। इस तरह के एकाधिकार का प्रयास देश में कई मणिपुर पैदा कर सकता है। धर्म, जाति और क्षेत्रीयता से एक दो बार तो सत्ता हासिल की जा सकती है परंतु इसके दुष्परिणाम दशकों तक भोगने पड़ते हैं। मुस्लिम नेताओं ने सत्ता पाने के लिए धर्म का दुरुपयोग किया जिसका परिणाम सूडान, पाकिस्तान, इराक, लीबिया, सीरिया आदि उजड़े हुए देश भुगत रहे हैं। भारत को अपने उज्ज्वल भविष्य को राजनेताओं की सत्ता लिप्सा से बचाना होगा। यदि मणिपुर समस्या का समाधान नहीं होता है तो इसकी जिम्मेदारी देश के सर्वोच्च नेतृत्व की होनी चाहिए। नेतृत्व अपनी संकुचित विचारधारा से मुक्त हो इसके लिए जनता को जागृत होना पड़ेगा, कड़वे सवालों से टकराना पड़ेगा वरना देश विकास की कई सीढ़ियां नीचे सरक जायेगा।

-डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

बारिश के सीजन के कारण हरी सब्जियों के भाव एकाएक आसमान छूने लगे

■ आवक कम होने पर दो से तीन गुना तक बढ़े भाव, टमाटर, अदरक में जबरदस्त उछाल

नोखा, (निसं)। बिपरजॉय तूफान का अब असर सब्जियों पर नजर आ रहा है। घरों की रसोई से हरी सब्जियों जैसे गायब सी होने लगी है। बिपरजॉय तूफान के कारण जहां जोधपुर और अहमदाबाद से होने वाली सब्जियों की सप्लाई में कमी आई है। वहीं अब हर साल की तरह हरी सब्जियों का सीजन भी खत्म होने वाला है। ऊपर से बारिश के सीजन के कारण हरी सब्जियों के भाव एकाएक आसमान छूने लगे हैं।

सब्जियों के भावों में आई एकाएक बढोतरी के कारण घरों से सब्जियां गायब होने लगी हैं। टमाटर पहले 40 रुपए किलो बिक रहे थे। अब भाव बढ़कर 120 रुपए हो गए हैं। यानी एक किलो के 80 रुपए बढ़ गए हैं।

बिपरजॉय तूफान ने गुजरात और प्रदेश के कई भागों में जमकर तबाही मचाई। जिसके कारण सर्वाधिक नुकसान सब्जियां उगाने वाले किसानों उठाना पड़ा।

तेज आंधी और तुफान के कारण यहां फसलें तबाह हो गई। वहीं बारिश ने भी किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। जिसके कारण किसानों को लाखों रुपए का नुकसान उठाना पड़ा। इसके साथ ही गुजरात में मचाई तबाही के कारण नोखा में सब्जियों की आने वाली सप्लाई भी पूरी तरह प्रभावित हो रही है। जहां एक ओर क्षेत्र में सब्जियों की सप्लाई के आने वाले ट्रक तुफान के कारण नहीं पहुंच गए। वहीं दूसरी ओर नोखा शहर की डिमांड के चलते एकाएक सब्जियों के भावों में उछाल आ गया। सब्जियों की बढ़ती महंगाई के चलते केर-सांगरी, काचर, बड़ी की सब्जी, बेसन गट्टा, भुजिया, पापड़, फोफलिया, मोगर, हवेजी, चना, मूंग आदि घरेलू रूप में सब्जियों में उपयोग हो रहा है।

सब्जी विक्रेता मनोज भार्गव ने बताया कि हरी सब्जियों का सीजन खत्म होने का समय है। जिस कारण सब्जियों के भाव बढे है। इन दिनों में हर साल सब्जियों की कीमतें बढती है। सब्जी विक्रेता पंकज भार्गव ने बताया कि टमाटर पिछले दिनों में 40 रुपए से कम दामों में बिक रहे थे, लेकिन अब टमाटर 120 रुपए किलो बिक रहा है। गृहणी कटला चौक निवासी मैना डागा व किरण डागा ने बताया कि सब्जियों के दामों में वृद्धि होने की वजह से घरेलू सब्जियां सुखाकर रखी गई, हरी सब्जियों के भाव बढ़ने के कारण हरी सब्जियां कम खरीदने लगे हैं।

आयड नदी में मछली पकड़ने के जाल में मगरमच्छ फंसा

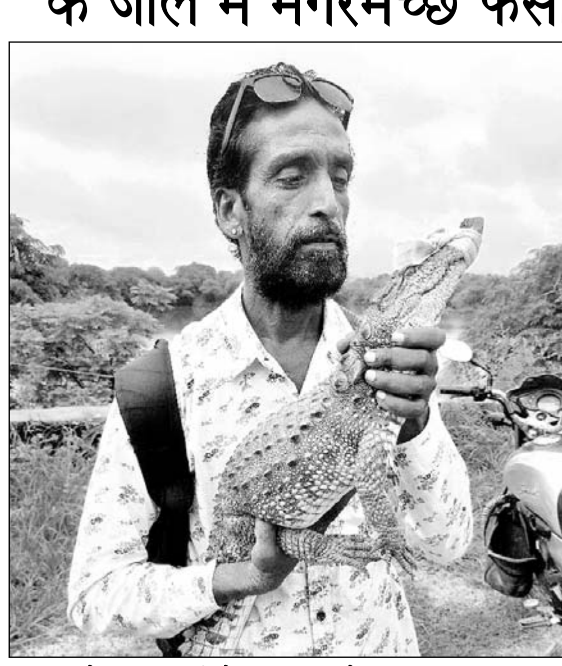

उदयपुर के आयड नदी से मगरमच्छ को सुरक्षित बाहर निकाला।

उदयपुर, (कासं)। आयड नदी में मछली पकड़ने के लिए डाले जाल में मगरमच्छ जाल में आ गया। गत रात्रि को आयड नदी में एक मगरमच्छ होने की सूचना वाइल्ड एनीमल रेस्क्यू सेंटर के संभागीयअध्यक्ष चमन सिंह चौहान को प्राप्त हुई।

सूचना पर चमन सिंह चौहान, निर्मल गमेती, रवि चैनल कोमल गमेती मौके पर पहुंची। मौके पर पाया कि मछली के जाल में एक मगरमच्छ का बच्चा जाल में फंसा हुआ था। स्थानीय लोगों ने बताया कि रात को कुछ मछली पकड़ने वालों ने जाल लगा या था। उस जाल में मछली तो नहीं फंसी लेकिन मगरमच्छ फंस गया। सवेरे मछली मारने वालों ने जाल को देखा तो उसमें एक मगरमच्छ का बच्चा फंस गया। मच्छीमार जाल को छोड़ भाग गए मगरमच्छ के बच्चों को जाल से छुड़वा कर बागबड़ा नेचर पार्क मैं सुरक्षित छोड दिया

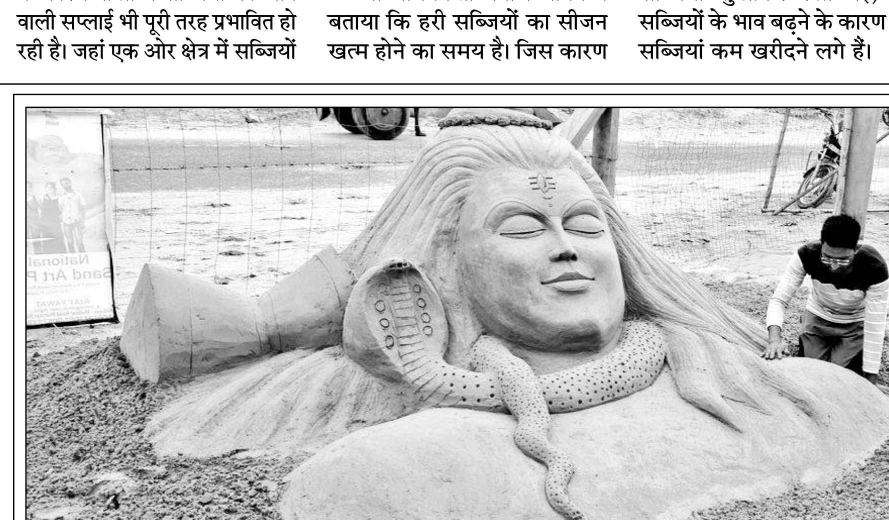

पुष्कर के रेतीले धोरों में सावन के पहले सोमवार के पूर्व संध्या पर भगवान शिव की बालू रेत कलाकृति बनाकर उन्हें नमन किया। यह सैंड आर्ट अजय सिंह रावत ने बनाई है।

सितम्बर तक 2.60 लाख पौधे लगाएगी "बीएसएफ गुजरात"

बाड़मेर, (निसं)। बीएसएफ गुजरात ने अपने सभी मुख्यालयों के साथ-साथ बाडमेर, कच्छ के रण एवं भुज के ठीक क्षेत्रों में स्थित सीमा चौकियों में बड़े पैमाने पर पौधारोपण अभियान आयोजित करके पर्यावरणीय स्थिरता को बढावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

इसमें स्थानीय समुदायों के साथ-साथ बीएसएफ कर्मियों, उनके परिवारों और पर्यावरण प्रेमियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। इस पहल का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से निपटना, जैव विविधता को बढाना और एक हरित और स्वस्थ ग्रह में योगदान देना है। बीएसएफ कैंपस गांधीनगर में, बीएसएफ गुजरात फ्रंटियर के महानिरीक्षक रवि गांधी ने अधिकारियों और जवानों के साथ पौधारोपण अभियान में भाग लिया। इस विशेष अभियान में इस वर्ष सितंबर माह तक विभिन्न प्रकार की वृक्ष प्रजातियों के 2.60 लाख पौधे रोपने की योजना है। पर्यावरण विशेषज्ञों और स्थानीय वन अधिकारियों के सहयोग से बीएसएफ उपयुक्त वृक्ष प्रजातियों के चयन और लगाए गए पेड़ों के पोषण और रखरखाव के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के कार्यान्वयन को भी सुनिश्चित कर रहा है। बीएसएफ कर्मियों को लगाए गए पेड़ों के रखरखाव के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि एक हरे ग्रह के लिए उनके स्वस्थ विकास को सुनिश्चित किया जा सके। सीमा सुरक्षा की अपनी प्राथमिक भूमिका के साथ-साथ बीएसएफ पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए भी लगातार कदम उठा रही है और संरक्षण प्रयासों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही है, जिससे एक हरित भविष्य बनाने का मिशन शुरू हो गया है। बल ऐसे पर्यावरण अभियानों को जारी रखेगा, विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग करेगा और हमारे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढाएगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 10 जुलाई, 2023

प्रथम सावन मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, रेवती नक्षत्र सांय 6:59 तक, अतिगंड योग दिन 12:33 तक, बालव करण प्रातः 7:22 तक, चन्द्रमा सांय 6:59 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सावन वन सोमवार व्रत है। पंचक सांय 6:59 पर समाप्त होंगे।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:26 तक, शुभ 9:08 से 10:50 तक, चर 2:14 से 3:56 तक, लाभ-अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिव समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।